मंगलाचरण

अरहन्त

इंदसदवंदियाणं तिहुअणिहिदमधुरविसद वक्कणं।
अंतातीदगुणाणं णमो जिणाणं जिद भवाणं ॥१॥

अरहन्त

त्रिलोकस्थ जीवों के लिए हितकारी मधुर एवं विशद वचनों से युक्त, अनन्त गुणों के धारक, चतुर्गतिरूप संसार के विजेता, शतेन्द्र वंदनीय जिन अरहन्त भगवान को मैं नमस्कार करता हूँ।

सिद्ध

अट्ठविहकम्ममुक्के, अट्ठगुणड्ढे अणोवमे सिद्धे।
अट्ठमपुढविणिविट्ठे, णिट्ठियकज्जे य वंदिमोणिच्चै ॥२॥

अष्टकर्मों से मुक्त, अष्टगुण संयुक्त, अनुपम, अष्टमपृथ्वी में स्थित, कृतकृत्य (करने योग्य कार्य जो कर चुके हैं) सिद्ध भगवान को मैं नित्य नमस्कार करता हूँ।

आचार्य

गयणमिव णिरुवलेवा अक्खोहा, सायरुव्व मुणिवसहा।
एरिसगुणणिलयाणं पायं पणमामि सुद्धमणो ॥३॥

आकाशवत निर्लेप एवं सागरवत क्षोभ से रहित मुनिवृषभ श्रेष्ठ आचार्य परमेष्ठी के चरणकमलों में शुद्ध मन से नमस्कार करता हूँ।

उपाध्याय

जो रयणतयजुतो णिच्चं धम्मोवदेसणे णिरदो।
सो उवज्झाओ अप्पा जदिवरवसहो णमो तस्स ॥४॥

नित्य ही धर्मोपदेश में तत्पर, मुनिवरों में प्रधान, रत्नत्रय संयुक्त उपाध्याय परमेष्ठी को नमस्कार हो।

साधु

दोदोसविप्पमुक्के तिदंडविरदे तिसल्लपरिसुद्धे।
तिण्णिमगारवरहिदे, पंचिंदियणिज्जिदे वंदे ॥५॥

राग द्वेष से विप्रमुक्त (मन-वचन-काय की प्रवृति रूप), त्रिदंड से विरहित (माया-मिथ्या-निदान रूप) त्रिशल्य से परिशुद्ध (अत्यन्त विरहित), (रस, ऋद्धि, गारवरुप) त्रिगारव से रहित, पंचेन्द्रिय विजेता मुनिजनों को मैं नमस्कार करता हूँ।

परमेष्ठी

अरुहा सिद्धाइरिया उवज्झाया साहु पंचपरमेष्ठी।
एयाण णमुक्कारो भवे भवे मम सुहं दिंतु ॥६॥

अरहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु, इन पंचपरमेष्ठी के लिये किया गया नमस्कार मुझे भव भव में सुख देवें।